# स्वतंत्रता संग्राम में पूर्णिमाबहन पकवासा का योगदान

**धंधुकीया पायल शंभुभाई**
M.A. I, इतिहास भवन
महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी
भावनगर विश्वविद्यालय,
भावनगर, गुजरात,
payalprajapati35026@gmail.com
Mo:8141426527

**प्रस्तावना :**

भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त करवाने के लिए स्वतंत्रा सेनानियों ने कई वर्षों तक संघर्ष किया था। इस आंदोलन में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से कई युवानो ,युवा महिलाएं और बुड्ढे भी शामिल हुए। ऐसे स्वतंत्रा सेनानियों की संख्या बहुत अधिक है। जैसे कि महात्मा गांधी, सरदार पटेल, सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू आदि से हम सब परिचित हैं। इस स्वतंत्र संग्राम में कई महिलाएं भी शामिल हुई थी। जैसे कि सरोजिनी नायडू, पंडित विज्यालक्ष्मी, कस्तूरबा गांधी, दुर्गा भाभी आदि से हम परिचित हैं। इस स्वतंत्र संग्राम में गुजरात की महिलाओं ने भी अपना योगदान दिया है जैसे कि शारदाबहन शाह ,उषाबहन मेहता, हंसाबहन मेहता, श्री लीलावती मुनशी, श्री शांताबहन पटेल जैसे अनेक महिलाओं ने योगदान दिया था। और हम सब भारत के ऐसे स्वतंत्र सेनानी से परिचित हैं। लेकिन कुछ स्वतंत्र सेनानी ऐसे भी थे जिन्होंने किसी ने किसी तरह से स्वतंत्र संग्राम में अतुलनीय योगदान दिया है। हालांकि उन लोगों में से जो आज भी इतने उजागर नहीं है, ऐसे ही गुजरात की एक महत्वपूर्ण महिला स्वतंत्रा सेनानी पूर्णिमाबहन पकवासा है। वह गुजरात की स्वतंत्र सेनानी और सामाजिक कार्यकर्ता थी। पूर्णिमाबहन के जीवन से प्रेरणा लेकर आने वाली पीढ़ी समाज, राष्ट्र और विश्व के निर्माण में अपना योगदान दे सकें। इसीलिए पूर्णिया में बहन की जीवन की चर्चा इस लेख में की है।

**पूर्णिमाबहन का जीवन परिचय**

पूर्णिमाबहन को ' डांग की दीदी' के नाम से जाना जाना है। पूर्णिमाबहन का जन्म 5 अक्टूबर 1913 के दिन गुजरात के सुरेंद्रनगर जिल्ले के लिबडी के पास रणपुर गांव में हुआ था। उसका मुल नाम पुष्पा था। पूर्णिमा बहन के पिताजी का नाम वज्रलाल था और माता का नाम चंचल बहन था। पूर्णिमाबहन उसके चार भाई बहन में से सबसे बड़े थे। पूर्णिमा बहन का विवाह अरविंद पकवासा के साथ हुआ था। पूर्णिमा बहन को तीन संतान थे। जिसमें दो लड़की और एक लड़काथा। पूर्णिमा बहन गुजरात के स्वतंत्र सेनानी और समाज के कार्यकर्ता थे।

पूर्णिमा भवन 8 साल की थी तब बड़ी मुश्किल से गांधी जी से मिली थी। यह एक अलौकिक क्षण था जिसने उसकी शेष जीवन को परिभाषित किया। पूर्णिमा बहन को बचपन से ही अपने अपने माता-पिता से आध्यात्मिक और मानवीय प्रेम प्राप्त हुआ था। किशोरी अवस्था में पूर्णिमाबहन निडर, उत्साही और अनुशासित थी। पूर्णिमा बहन अपने पास छोटी सी छुरी रखती थी। और छुरी रखने के बात जानकर गांधी बापू को अच्छा नहीं लगेगा। तब ए बात जानकर पूर्णिमाबहन सीधे बापू के पास दौड़कर गए। और बापू से पूर्णिमा बहन ने प्रश्न किया ' क्या आत्मरक्षा के लिए छुरी रखना अपराध है ? ' तब बापू ने इस किशोरी पूर्णिमा बहन को बधाई दी और कहा बेटा मुझे तुम्हारी बातें अच्छी लगती है। आप बहनों को आत्मरक्षा की कला सीखनी जरूरी है। और मुझे ज्यादा खुशी तब होती कि तुम समाज की और बहनों को तालीम देती। तब से ही पूर्णिमा बहन के मानस में महिला परीक्षण के बीज रोपाई गए।

**स्वतंत्र सेनानी तरीके पूर्णिमाबहन**

पूर्णिमाबहन ने 18 साल की छोटी सी उम्र में ही स्वतंत्र संग्राम में भाग लिया था। पूर्णिमाबहन गुजरात के दांडीकुछ यात्रा में भाग लिया था। जिससे गांधी जी ने 12 मार्च 1930 मैं शुरू किया था । वह सविनय कानून भंग के हिस्से के रूप शरू किया था। दांडी कुछ नमक का एकाधिकार कानून तोड़ने के लिए था। इस दांडीकुछ के आंदोलन के दौरान पूर्णिमाबहन गांधी जी की आज्ञानुसार शहरों और गांवों में प्रचार के लिए गए थे। तब उन्होंने महिलाओं को स्वदेश प्रेम, रेडियो कताई, खादी बुनाई, पीठों पर दारूबंदी और पिकेटिंग जैसे कार्यों के लिए जागृत किया था।

इस 1930 की दांडी कुछ के परिणाम स्वरूप 60.000 सत्याग्रहीओ के साथ गांधीजी की धड़पकड़ की थी। उनमें 17,000 से अधिक महिलाए थी। और उसमें पूर्णिमाबहन भी थी। पूर्णिमाबहन को राजकोट के उस जेल रखा था जिनमे कस्तूरबा, मणिबहन पटेल और मृदुला साराभाई को कैद किया था। इस जेल में पूर्णिमाबहन ने अपना समय कस्तूरबा और जेल के अन्य केदियो को लेखन के कौशल सिखाने में दिया। और उस समय उन लोगों के साथ सबन्ध धनिष्ट् हो गए। पूर्णिया बहन ने 16 की उम्र मै ही अपनी माँ को खोया था इसीलिए पूर्णिमा बहन ने कस्तूरबा को अपनी माँ माना और उसे प्यार करती थी।

पूर्णिमा बहन पकवासा ने राजनीति में भागीदारी 1938 में हरिपुरा मे भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस के 51 सत्र के दौरान प्रगट किया था। यह सत्र इसीलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि उसकी अध्यक्षता में सुभाष चंद्र बोस ने अध्यक्ष के रुप में गांधीजी को और नेताओं के बीच मतभेद को खोल दिया था।

**सामाजिक कार्यकर्ता तरीके पूर्णिमाबहन**

पूर्णिमा बहन ने शादी के बाद अपने तीन बच्चों के पालन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए सक्रिय राजनीतिक जीवन का भंवर छोड़ दिया। और वह एक कुशल मणिपुरी नृत्यांगना और शास्त्रीय गायक थी। इसीलिए पूर्णिमाबहन ने शास्त्रीय कला , परंपराओं के विकास का समर्थन करना शुरू कर दिया।

पूर्णिमा बहन ने सामाजिक मुद्दों का जुनून फिर से केंद्र में लिया। और 1954 में इन्होंने 'शक्ति दल' नामक एक संगठन शुरू किया और कई वर्षों तक नासिक में एक सैन्य स्कूल के प्रमुख के रूप में काम किया। आदिवासी लड़कियों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए जीवन भर के संघर्ष के प्रति उनके दायित्व ने 1974 मैं गुजरात के डांग जिले के सापुतारा क्षेत्र मैं 'ऋतंभरा' विश्वविद्यापीठकी स्थापना की। और सापुतारा में आवासीय विद्यालय और कॉलेज बनने के लिए अपने गतिविधियों का विस्तार किया। स्कूल में मुख्य रूप से डांग की आदिवासी लड़कियों की सेवा की थी। ऋतंभरा मैं पूर्णिमा बहन का जीवन और कार्य में अजेत गति थी। वह उन सभी लड़कियों में शिक्षा, शारीरिक परीक्षण, शास्त्रीय कला और मूल्यों के प्रति प्रेम पैदा करने की कोशिश की। शिक्षा के क्षेत्र में उनके काम को एक ग्रामीण विकास ट्रस्ट के माध्यम से विकासात्मक कार्य पूरेकरे गए। डांग के क्षेत्र के साधारण आदिवासियों के लिए वह 'डांग की दीदी 'थी। उनकी गुरु और रक्षक थी।

2004 मैं समाज सेवा के कार्य बदल 'पद्मभूषण' पुरस्कार देकर सम्मानित किया । और 25 अप्रैल 2016 को सूरत में 102 साल की उम्र में पूर्णिमा बहन का निधन हुआ।

**समापन**

ऐसे हम कह सकते है की स्वतंत्र सेनानी तो बहोत थे पर पूर्णिमा बहन पकवासा सबसे आगे थी क्योंकि उन्होंने कस्तूरबा गांधी, मणिबहन पटेल और मृदुला साराभाई को भी जेल मे पढाया था। लिबडी सत्याग्रह और दांडीकुछ यात्रा में भाग लिया था। उन्होंने आदिवासी लोगों के लिए काम किया था और आदिवासी को शिक्षित किया था। उस वजह से उन्हें 'डांगी दीदी' भी कहा जाता है।

**संदर्भ ग्रंथ**

(१) जयाबहन शाह, सौराष्ट्र के स्वतंत्र सेनानी और लडतो, सौराष्ट्र रचनात्मक समिति सेवा ट्रस्ट

(२) बेला ठाकर, नारीप्रतिभाओ, गुर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय

(३) मीनाक्षी ठाकुर, गुजरात के नारी- रत्नो